July To September 2015
SCHOLARS IMPACT
Quarterly
Research Journal
Online : ISSN-2394-7632
Print : ISSN-2394-7640

9

# सागर जिले के आर्थिक विकास में गैर सरकारी संगठन का योगदान

**डॉ. उतसव आनन्द**
(सहायक प्राध्यापक)
अर्थशास्त्र विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,सागर(म.प्र.)

**अभिलाषा साहू (शेधार्थी)**
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,सागर(म.प्र.)

**मुख्यशब्दः–**
दीर्घकालीन,समन्वितविकास,राष्ट्रीय आय, गैर सरकारी संगठन,प्रति व्यक्ति आय, मानव कल्याण।

**साराशंः–**
आर्थिक विकास की प्रक्रिया में मानव संसाधन को सदैव महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यदि देश में मानव संसाधन का एक बड़ा भाग गरीब है तो कोई भी देश समृद्ध नहीं हो सकता।गैर सरकारी संगठन एक निजी संगठन है जो गरीबों को रोजगार, पर्यावरण संरक्षण, बुनियादी सामाजिक सेवाएं, सामुदायिक विकास आदि कार्यों का निष्पादन करता है।भारत में 17वी षताब्दी में गुरु रामदास ने बुनियादी अधिकारों से लड़ने हेतु लिए कुछ स्थानीय समूहों का गठन किया।19वी षताब्दी में राजा राममोहन राय, रानाडे, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद और ईष्वरचन्द्र विद्यासागर ने सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जनता को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व व सामाजिक न्याय के आधार पर नीतिगत प्रावधानों के अनुरुप देश के नियोजित विकास के मार्ग को अपनाया गया।गैर सरकारी संगठन द्वारा विभिन्न स्रोतों जैसे–वित्तीय संस्थान, व्यक्तियों द्वारा वित्तीय योगदान, जिला ग्रामीण विकास ऐजेन्सी, यूनीसेफ, नाबार्ड, एस.जी.एस.वाई.,आदि स्रोतो द्वारा वित्तीय सुविधाएं प्राप्त करते है।तथा उसका उपयोग कल्याणकारी योजनाओं में किया जाता है। सागर षहर में कार्यरत् गैर सरकारी संगठनों को सबसे अधिक समस्याओं का सामना लोगों में साक्षरता के अभाव (83.3%) के कारण

करना पड़ता है। षिक्षा के अभाव में लोगों को सरकारी कार्यक्रमों की सही जानकारी नहीं हो पाती जिससे उनके सहयोग का अभाव होता है।

## प्रस्तावनाः—

किसी भी देष की आर्थिक तथा सामाजिक समृद्वि के लिए एक दीर्घकालीन, समन्वित एवं नियोजित प्रयत्न अति आवष्यक होते है। भारत जैसे विषाल तथा भौगोलिक, सांस्कृतिक विविधता वाले देष में आर्थिक विकास की चुनौती और भी जटिल हो जाती है। देष की ऐतिहासिक, राजनैतिक सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां भी विकास को प्रभावित करती है, यह परिस्थितियां देष की बाधक भी हो सकती है और साधक भी। आर्थिक विकास के अंतर्गत राष्ट्रीय आय में मात्रात्मक परिवर्तन के साथ साथ संरचनात्मक परिवर्तन भीहोता है। आर्थिक विषमता में कमी के साथ साथ जनता के जीवन स्तर एवं कल्याण में वृद्धि होती है। राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर व दीर्घकालीन वृद्धि होती है। प्रसिद्ध भारतीय कल्याणवादी अर्थषास्त्री अमर्त्य सेन के षोधपत्र Expansion of Entitlement and Capability के अनुसार,''**यदि अधिकारों का विस्तार कर दिया जाए तो विकास तो स्वतः ही हो जाएगा**'' विकास के लिए अधिकार जरुरी है।

देष में आर्थिक विकास के महत्व को स्वीकार करते हुए अनेकों कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जैसे समन्वित विकास कार्यक्रम, स्वरोजगार हेतु प्रषिक्षण, महिला व विकास कार्यक्रम, गरीबी एवं बेरोजगारी उन्मूलन हेतु रोजगार गारंटी योजना, सर्व षिक्षा अभियान, स्वषक्ति योजना आदि।वर्तमान में गैर सरकारी संगठनों का एक विषाल क्षेत्र है।लोगों की आमदनी, रोजगार, उपभोग, रहन सहन के स्तर में सुधार हुआ है, औसत आयु बढ़ी एवं जन्म दर व मृत्यु दर में प्रषंसनीय गिरावट आई है, साक्षरता का प्रसार हुआ और षिक्षा का आधार व्यापक हुआ है। गैर सरकारी संगठनों की भूमिका के बारे में योजना दस्तावेज में कहा गया है कि निचले स्तर पर सहभागिता पर आधारित कारगर योजना प्रक्रिया के लिए गैर सरकारी संगठनों एवं अन्य जन संगठनों का सहयोग अत्यंत आवष्यक है। उन्होंने जनता के प्रति सेवा और घनिष्टता के उत्कृष्ट गुणों का परिचय दिया है। केंद्र सरकार व राज्य सरकारों द्वारा अनेकों ऐसी योजनाऐं बनाई गई है जो गैर सरकारी संगठनों द्धारा ही क्रियान्वित की जा रही है।इसके अलावा नए कार्यक्रमों को आरम्भ करने, उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन करने की क्षमता भी गैर सरकारी संगठन ने दर्षाई है, वर्तमान समय में विकास के परिणाम में गैर सरकारी संगठनों का महत्वपूर्ण योगदान है।

## सागर जिले का परिचयः—

सागर जिला, भारत देश की हृदय स्थली,मध्यप्रदेश के उत्तरी मध्य भाग में स्थितबुन्देलखण्ड क्षेत्र का प्राचीनतम षहर है। जिसका कुल क्षेत्रफल 10252 वर्ग कि. मी. है।यह $23^0 10'$—$24^0 27'$ उत्तरी अक्षांश और $78^0 4'$ —$79^0 2'$ पूर्वी देषॉन्तर के मध्य स्थित है। धरातल की बनावट एक समान नहीं है। कहीं भूमि समतल, तो कहीं पठारी। 26 जनवरी 1973 के गठित सागर संभाग का महत्वपूर्ण जिला है। जिले के उत्तर में उत्तरप्रदेश का

ललितपुर जिला दक्षिण में नरसिंहपुर और रायसेन जिले, पश्चिम में विदिशा और पूर्व में दमोह जिला स्थित है। वहीं उत्तर–पूर्वी भाग में छतरपुर और उत्तर–पश्चिमी भाग में अशोक नगर जिला स्थित है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 10252 वर्ग किलोमीटर है। इसकी लंबाई दक्षिण पूर्व से उत्तर पश्चिम में 169 किमी. तथा पूर्व–पश्चिम में चौड़ाई 120 किमी. है।

सागर नगर झील से अलंकृत एक लुभावनी भू–आकृति तथा स्वास्थ्कर जलवायु वाला नगर है। सागर जिले के नाम के विषय में अवधारणा है कि प्राचीनकाल में सागर का निर्माण एक विशाल जलाशय के आसपास विकसित हुआ होगा और जलाशय की विशालता के आधार पर इसे समुद्र पर्याय **'सागर'** कहा गया होगा।धीरे–धीरे उसी के समकक्ष सागर नगर अस्तित्व में आया। सागर के तालाब का निर्माण उतना पुरातन नहीं है, जितना इस नगर का इतिहास। सत्रहवीं शताब्दी के आसपास उदनशाह नामक दांग राजा ने एक शिकारगाह और गढ़ी का निर्माण कराया था, जिसका नाम **परकोटा** पड़ा और यही सागर की प्राचीनतम बस्ती मानी जाती है।

तालिका–1सागर जिले की जनसंख्या का विवरण

| | 2001 | 2011 |
|---|---|---|
| वास्तविक जनसंख्या | 20,21,987 | 23,78,458 |
| पुरूष | 10,73,205 | 12,56,257 |
| महिलाएं | 9,48,782 | 11,22,201 |
| जनसंख्या वृद्धि | 22.70% | 17.63% |
| क्षेत्रफल | 10,252 | 10,252 |
| घनत्व | 197 | 232 |
| लिगांनुपात | 884 | 893 |

स्रोत–census india.gov.in 2012

तालिका–2 सागर जिले में साक्षरता की प्रगति

| वर्ष | साक्षारता प्रतिशत पुरुष | साक्षरता प्रतिशत महिला | साक्षरता प्रतिशत कुल जनसंख्या |
|---|---|---|---|
| 1971 | 38.79 | 15.68 | 27.84 |
| 1981 | 45.98 | 21.11 | 34.26 |
| 1991 | 53.57 | 29.63 | 42.35 |
| 2001 | 65.24 | 44.13 | 55.34 |
| 2011 | 86.27 | 67.71 | 77.52 |

स्रोत– भारत की जनगणना भाग–2, म.प्र. जिला जनगणना पुस्तिका पार्ट–XIII-B Census 2011

## गैर सरकारी संगठन की पृष्ठभूमिः–

सन् 1863 में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गैर सरकारी संगठन के रूप में **रेड क्रॉस इन्टरनेषनल कमिटी** स्थापित की गई। 1945 में गैर सरकारी संगठन का विचार एक सलाहकारी संस्था के रुप में संयुक्त राष्ट की स्थापना के साथ United Nation Charter Act के 71वें अनुच्छेद के 10वें अध्याय में आया। 1950 में अन्तर्राष्टीय गैर सरकारी संगठन को ECOSOCके Resolution 288 (X) में सबसे पहले परिभाषित किया गया था।

**विष्व बैंक के अनुसार,** गैर सरकारी संगठन एक निजी संगठन है जो पीड़ितों को राहत प्रदान करना, गरीबों को रोजगार हेतु प्रोत्साहित करना, पर्यावरण संरक्षण, बुनियादी सामाजिक सेवाएं उपलब्ध कराना, सामुदायिक विकास आदि कार्यों का निष्पादन करता है। भारत में 17वी षताब्दी में गुरु रामदास ने बुनियादी अधिकारों के लिए लड़ने हेतु कुछ स्थानीय समूहों का गठन किया था।कालान्तर में देष की सामाजिक संरचना में परिवर्तन आया। बाल विवाह, सती प्रथा का विरोध किया गया; विधवा विवाह को कानूनी मान्यता, स्त्री षिक्षा का प्रचलन हुआ। 19वी षताब्दी में राजाराम मोहन राय, जस्टिस महादेव गोविंद, रानाडे, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद और ईष्वरचन्द्र विद्यासागर ने सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जनता को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 20वीं षताब्दी के प्रारम्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सामाजिक उत्थान के लक्ष्य और जनसहभागिता के लिए लोगों को संगठित करने का रास्ता दिखाया था।

70 के दषक में स्वैच्छिक क्षेत्र में यह महसूस किया जाने लगा कि अन्य संगठनों, जन समुदायों और सरकार के साथ कुछ नए अनुभवों को लेकर, संवाद कायम करने की जरुरत है तथा अनेक गैर सरकारी संगठनों की ओर से बुलेटिनों और सूचनापत्रों का प्रकाषन प्रारम्भ हुआ, इसके अन्तर्गत संचार व विष्लेषण द्वारा अब तक के अनुभवों को दिषा देने का प्रयास निहित था। आपातकाल के बाद जे. पी. आंदोलन से प्रभावित **सोषल एक्षन ग्रुप** के रुझान का स्वैच्छिक और रचनात्मक कार्य के क्षेत्र में प्रवेष हुआ और बड़ी संख्या में सामुदायिक विकास के लक्ष्य को समर्पित नए संगठनों का उदय हुआ।`80 के दषक में कुछ सहयोगी संगठन और नेटवर्क उभर कर सामने आए जिन्होने स्वैच्छिक प्रयास और स्वैच्छिक कार्यवाही को गति और दिषा प्रदान की।

**गैर सरकारी संगठन सरकारी प्रभाव से स्वतंत्र, गैर लाभ, सामाजिक कल्याण की भावना से एक साथ कार्य करने वाले लोगों का समूह है। यह सरकार द्वारा पूर्ण या आंषिक रुप से वित्त पोषित होते है लेकिन सरकारी प्रतिनिधियों को छोड़कर स्वयं व निजी रुप से सदस्यों को षामिल कर कार्य करते है।**

## अध्ययन का क्षेत्रः–

प्रस्तुत षोधपत्र का अध्ययन क्षेत्र सागर षहर है, जो कि तहसील और विकास खण्ड दोनों है। सागर में 9 तहसील सागर, रहली, खुरई, बण्डा, देवरी, गढ़ाकोटा, केसली, षाहगढ़, बीना, 11 विकास खण्ड सागर, षाहगढ़, जैसीनगर, बण्डा, खुरई, बीना, मालथौन, रहली, देवरी, केसली, में विभक्त है। षोधपत्र में सिर्फ सागर नगर में कार्यरत् गैर सरकारी

संगठनों की कार्यप्रणाली का अध्ययन किया गया है।प्रस्तुत षोधपत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त विषय से सम्बंधित महत्वपूर्ण एवं तथ्यपरक जानकारी प्रस्तुत की गई है। प्रस्तुत षोधपत्र में संकलित समंक उत्तरदाताओं के द्वारा दिए गए उत्तरों पर आधारित है।

षोध के निम्नलिखित उद्देष्य है–

- सागर मेंकार्यरत गैर सरकारी संगठन द्वारा मानव कल्याण हेतु संचालित कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
- सागर मेंकार्यरत गैर सरकारी संगठन के प्राप्तियों एवं व्ययों के स्त्रोतों का आंकलन करना।

वर्तमान समय में सागर षहर में कुल 120 गैर सरकारी संगठन कार्यरत् है। अतः समग्र इकाइयों का अध्ययन न करके सविचार निदर्षन विधि एवं प्रतिषत विधि के आधार पर 10 प्रतिषत अर्थात् 12 इकाइयों का अध्ययन किया है।

तालिका–3 चयनित गैर सरकारी संगठनों की सूची

| क्र | संस्था का नाम | मुख्य कार्यालय | पंजीयन | पंजीकरण संख्या |
|---|---|---|---|---|
| 1 | रुरल इंवायरमेंट डेवलपमेंट सोसाइटी | सागर | 02.08.2007 | 1153 |
| 2 | सुबोध षिक्षा एवं समाजोत्थान समिति | सागर | 26.05.2004 | 4436 |
| 3 | श्रम षक्ति महिला सेवा समिति | सागर | 03.08.2001 | 3286 |
| 4 | षिखर सर्वोदय समिति | सागर | 10.03.2008 | 06452 |
| 5 | लाइफ लाइन सर्विस सोसायटी | सागर | 06.01.2001 | 3058 |
| 6 | महिला जागरण एवं कल्याण परिषद् | सागर | 24.04.2003 | 3911 |
| 7 | महिला जाग्रति कला मंच | सागर | 26.03.1996 | 1447 |
| 8 | महिला जागृति संस्था | सागर | 27.09.1995 | 1218 |
| 9 | लक्ष्य सोषल वेलफेयर सोसायटी | सागर | 29.01.2009 | 06884 |
| 10 | बोहरे एजूकेषनल कल्चर सोषल वेलफेयर सोसायटी | सागर | 01.01.2009 | 847 |
| 11 | जन चेतना सामाजिक संस्थान | सागर | 03.03.2008 | 06440 |
| 12 | निर्मल सागर सामाजिक विकास संस्थान | सागर | 27.04.2012 | 09106 |

स्रोत–म. प्र. जन परिषद अभियान, सागर।

## गैर सरकारी संगठन द्वारा संचालित कार्यक्रमः–

सागर षहर में गैर सरकारी संगठनों द्वारा मानव विकास एवं समाज कल्याण हेतु विभिन्न कार्यक्रमों को संचालित किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों को उनकी गतिविधियों के अनुसार निम्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। जो कि तालिका द्वारा स्पष्ट है।

तालिका–4 गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित कार्यक्रमों का विवरण

| गतिविधियां | उप–गतिविधियां | चयनित एन.जी.ओ. की संख्या | प्रतिक्रियां | प्रतिषत |
|---|---|---|---|---|
| आर्थिक | सूक्ष्म वित | 12 | 4 | 33.3 |
| | स्वयं सहायता समूह | 12 | 7 | 58.3 |
| | रोजगारपरक कार्यक्रम | 12 | 9 | 75 |
| | स्वरोजगार प्रषिक्षण कार्यक्रम | 12 | 10 | 83.3 |
| सामाजिक | जीविका संबंधी कार्यक्रम | 12 | 6 | 50 |
| | सर्व षिक्षा अभियान | 12 | 8 | 66.6 |
| | एड्स जागरुकता अभियान | 12 | 7 | 58.3 |
| | बाल विकास कार्यक्रम | 12 | 6 | 50 |
| | महिला सषक्तिकरण | 12 | 11 | 91.6 |
| अन्य गतिविधियां | वाटर शेड कार्यक्रम | 12 | 4 | 33.3 |
| | कृषि संबंधी कार्यक्रम | 12 | 5 | 41.6 |
| | निर्माण संबंधी कार्यक्रम | 12 | 4 | 33.3 |
| | योजनाओं की जानकारी लोगो तक पहुचाना | 12 | 11 | 91.6 |

तालिका 4 से स्पष्ट है कि सागर में आर्थिक गतिविधियां, सामाजिक गतिविधियां, अन्य गतिविधियों से सम्बंधित कार्यक्रमों का संचालन करते है। आर्थिक गतिविधियों के अन्तर्गत 33.3 प्रतिषत गैर सरकारी संगठन सूक्ष्म वित, 58.3 प्रतिषत स्वयं सहायता समूह, 75 प्रतिषत रोजगारपरक कार्यक्रम, 83.3 प्रतिषत गैर सरकारी संगठन स्वरोजगार प्रषिक्षण कार्यक्रम सम्बंधित कार्यक्रमों का संचालन करते है।

सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत 50 प्रतिषत जीविका संबंधी कार्यक्रम, 66.6 प्रतिषत सर्व षिक्षा अभियान, 58.3 प्रतिषत एड्स जागरुकता अभियान, 50 प्रतिषत बाल विकास कार्यक्रम, 91.6 प्रतिषत महिला सषक्तिकरण गैर सरकारी संगठन स्वरोजगार प्रषिक्षण कार्यक्रम सम्बंधित कार्यक्रमों का संचालन करते है।

अन्य गतिविधियों के अन्तर्गत 33.3 प्रतिषत वाटर षेड कार्यक्रम, 41.6 प्रतिषत कृषि संबंधी कार्यक्रम, 33.3 प्रतिषत निर्माण संबंधी कार्यक्रम, 91.6 प्रतिषत गैर सरकारी संगठन सरकारी योजनाओं को लोगो तक पहुचाने कार्य सम्बंधित कार्यक्रमों का संचालन करते है।

तालिका–5 गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित कार्यक्रमों की प्रकृति का विवरण

| क्र. | कार्यक्रमों की प्रकृति | चयनित एन. जी. ओ. की संख्या | प्रतिक्रियां | प्रतिषत |
|---|---|---|---|---|
| 1 | अल्पकालीन योजनाएं | 12 | 7 | 58.3 |
| 2 | दीर्घकालीन योजनाएं | 12 | 3 | 25 |
| 3 | दोनों योजनाएं | 12 | 2 | 16.6 |
| | योग | 12 | 12 | 100 |

तलिका 5 से स्पष्ट है किसागर षाहर में कार्यरत् गैर सरकारी संगठनों में 58.3 प्रतिषत गैर सरकारी संगठन अल्पकालीन योजनाएं, 25 प्रतिषत गैर सरकारी संगठन दीर्घकालीन योजनाएं एवं 16.6 प्रतिषत गैर सरकारी संगठन दोनों प्रकार की योजनाओं को संचालित कर रहे है।

तालिका–6 गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित कार्यक्रमों प्रचार प्रसार के माध्यमों का विवरण

| क्र. | प्रचार प्रसार के माध्यम | चयनित एन. जी. ओ. की संख्या | प्रतिक्रियां | प्रतिषत |
|---|---|---|---|---|
| 1 | पोस्टर द्वारा | 12 | 7 | 58.3 |
| 2 | दीवार पेन्टिंग द्वारा | 12 | 5 | 41.6 |
| 3 | समाचार पत्र द्वारा | 12 | 10 | 83.3 |
| 4 | पिक्चर स्लाइड द्वारा | 12 | 3 | 25 |
| 5 | रोड षो द्वारा | 12 | 8 | 66.6 |

तलिका 6से स्पष्ट है कि सागर षहर में कार्यरत् गैर सरकारी संगठनों में कार्यक्रमों के प्रचार प्रसार पोस्टर के माध्यम से, दीवार पेन्टिंग द्वारा, समाचार पत्र द्वारा, संगठन पिक्चर स्लाइड द्वारा एवं संगठन रोड षो द्वारा करते है। सबसे अधिक प्रचार प्रसार समाचार पत्र द्वारा किया जाता है।

तालिका–7 गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित कार्यक्रमों के संचालन का उद्देष्यों का विवरण

| क्र. | संचालन का उद्देष्य | चयनित एन. जी. ओ. की संख्या | प्रतिक्रियां | प्रतिषत |
|---|---|---|---|---|
| 1 | सामाजिक कल्याण | 12 | 8 | 66.6 |
| 2 | आय प्राप्त करना | 12 | 2 | 16.6 |
| 3 | दोनों | 12 | 2 | 16.6 |
| | योग | 12 | 12 | 100 |

तालिका क्र. 7 के अनुसार सागर में 66.6 प्रतिषत गैर सरकारी संगठन का मुख्य उद्देष्य सामाजिक कल्याण, 16.6 प्रतिषत गैर सरकारी संगठन का आय प्राप्त करना एवं 16.6 प्रतिषत गैर सरकारी संगठन दोनों उद्देष्यों को लेकर योजनाओं व कार्यक्रमों का संचालन कर रहे है।

तालिका–8 गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित कार्यक्रमों के संचालन में होने वाली समस्याओं का विवरण

| क्र. | समस्याओं का कारण | चयनित एन. जी. ओ. की संख्या | प्रतिक्रियां | प्रतिषत |
|---|---|---|---|---|
| 1 | साक्षरता का अभाव | 12 | 10 | 83.3 |
| 2 | कार्य के अनुभव का अभाव | 12 | 1 | 8.3 |
| 3 | लोगों के सहयोग का अभाव | 12 | 8 | 66.6 |
| 4 | सदस्यों के मध्य सहमति का अभाव | 12 | — | — |

तलिका 8 से स्पष्ट है कि सागर में संगठनों में 83.3 प्रतिषत संगठन साक्षरता के अभाव की समस्या का सामना करते है। जबकि 8.3 प्रतिषत कार्य के अनुभव का अभाव एवं 66.6 प्रतिषत लोगो के सहयोग का अभाव की समस्या का सामना करते है। संगठन आपस में सदस्यों के मध्य सहमति के अभाव का सामना नहीं करते।

कल्याणकारी क्रियाओं के लिए वित्तीय साधनों की आवष्यकता होती है यहीं कारण है कि गैर सरकारी संगठन द्वारा विभिन्न स्रोतों से पूंजी एकत्र की जाती है तथा उसका उपयोग कल्याणकारी योजनाओं में किया जाता है। गैर सरकारी संगठन वित्तीय स्रोतो के अन्तर्गत वित्तीय संस्थान, व्यक्तियों द्वारा वित्तीय योगदान, जिला ग्रामीण विकास ऐजेन्सी, सदस्यता षुल्क, यूनीसेफ, नाबार्ड, षिक्षा विभाग, वर्ल्ड विजन, एस. जी. एस. वाई.,जिला पंचायत स्रोतो द्वारा वित्तीय सुविधाएं प्राप्त करते है, जो कि तालिका क्र. से स्पष्ट है।

तालिका–9 कार्यक्रमों के संचालन में एन.जी.ओ. की सहयोगी वित्तीय एजेंसियों का विवरण

| क्र. | वित्तीय एजेंसियां | चयनित एन.जी.ओ. की संख्या | प्रतिक्रियां | प्रतिषत |
|---|---|---|---|---|
| 1 | जिला पंचायत | 12 | 8 | 66.6 |
| 2 | षहरी विकास प्राधिकरण | 12 | 5 | 41.6 |
| 3 | नाबार्ड | 12 | 7 | 58.3 |
| 4 | षिक्षा विभाग | 12 | 8 | 66.6 |
| 5 | वर्ल्ड विजन | 12 | 5 | 41.6 |
| 6 | यूनिसेफ | 12 | 5 | 41.6 |
| 7 | एस. जी. एस. वाई. | 12 | 4 | 33.3 |
| 8 | डी. आर. डी. ए. | 12 | 7 | 58.3 |
| 9 | स्वयं | 12 | 5 | 41.6 |

तालिका–10 गैर सरकारी संगठनों के व्यय का विवरण

| क्र. | चयनित एन. जी. ओ. | व्यय के स्त्रोत (लगभग)रुपये में मासिक | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | कर्मचारियों का वेतन (प्रतिषत) | प्रबंधन संबंधी (प्रतिषत) | प्रचार प्रसार (प्रतिषत) | अन्य व्यय (प्रतिषत) |
| 1 | रुरल इंवायरमेंट डेवलपमेंट सोसाइटी | 48.2 | 34.4 | 17.2 | – |
| 2 | सुबोध षिक्षा एवं समाजोत्थान समिति | 49.3 | 23 | 18.4 | 9.2 |
| 3 | श्रम षक्ति महिला सेवा समिति | 60.2 | 26.5 | 12 | 1.2 |
| 4 | षिखर सर्वोदय समिति | 41.6 | 50 | 4.1 | 4.1 |
| 5 | लाइफ लाइन सर्विस सोसायटी | 69.2 | 21 | 9.6 | – |
| 6 | महिला जागरण एवं कल्याण परिषद् | 26.6 | 53.3 | 16 | 4 |
| 7 | महिला जाग्रति कला मंच | 50 | 41.6 | 8.3 | – |
| 8 | महिला जागृति संस्था | 57 | 28.5 | 14 | – |
| 9 | लक्ष्य सोषल वेलफेयर सोसायटी | 69.6 | 17.4 | 6.9 | 5.9 |
| 10 | बोहरे एजूकेषनल कल्चर सोषल वेलफेयर सोसायटी | 48.7 | 42.6 | 7.3 | 1.2 |
| 11 | जन चेतना सामाजिक संस्थान | 56 | 40 | 4 | – |
| 12 | निर्मल सागर सामाजिक विकास संस्थान | 53.7 | 38.7 | 5.3 | 2.1 |

तालिका–11 गैर सरकारी संगठनों के व्यय का विवरण कार्यरत

| क्र. | व्यय के स्त्रोत | चयनित एन.जी.ओ. का कुल व्यय (रुपये में) | प्रतिषत |
|---|---|---|---|
| 1 | कर्मचारियों का वेतन | 526000 | 52.5 |
| 2 | प्रबंधन संबंधी | 334000 | 33.3 |
| 3 | प्रचार प्रसार | 117500 | 11.7 |
| 4 | अन्य व्यय | 23200 | 2.3 |
| | योग | 10,00,700 | 100 |

तालिका क्रमांक 11 से स्पष्ट है कि संगठनों द्वारा 52.5 प्रतिषत कर्मचारियों पर वेतन, 33. 3 प्रतिषत प्रबंधन सम्बंधी व्यय, 11.7 प्रतिषत प्रचार प्रसार पर तथा 66.6 प्रतिषत अन्य व्ययों पर व्यय किया जाता है।

## सुझावः–

अध्ययन से ज्ञात होता है कि संगठन में कार्यक्रम का संचालन किस क्षेत्र में, किस प्रकार एवं उन्हें किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उनके निराकरण हेतु सुझाव निम्नलिखित है–

* आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए गैर सरकारी संगठनों को ऐसे ठोस कार्य करना चाहिए जिनसे समाज एवं सरकार दोनों प्रभावित हो। तथा सरकार को चाहिए कि ऐसी संस्थाओं में वह अपना पूर्ण योगदान दे।
* मानव में सेवा भावना जागृत करने के लिए त्याग की भावना का प्रसार एवं चेतना का विकास किया जाना चाहिए ताकि उनके द्वारा अपनाए जाने वाले क्रियाकलापों को गति मिल सके।
* गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित कार्यों में गतिषीलता एवं पारदर्षिता तभी लाई जा सकती है जब सफल संचालन हेतु दक्ष, कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारियों की संख्या बढ़ाई जाए।
* गैर सरकारी संगठनों में विभिन्न प्रकार के प्रषिक्षण कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है, जिनमें कुछ कार्यक्रमों पर अधिक व्यय करना पड़ता है, जिसे छोटे संगठन वहन नहीं कर पाते है। अतः सरकार को चाहिए कि वह इन संगठनों को आवष्यकतानुसार सहयोग प्रदान करें।
* गैर सरकारी संगठनों को प्रचार प्रसार में कोई कमी नहीं बरतनी चाहिए।
* प्रत्येक संगठनों में सहयोग की भावना व मधुर संबंध स्थापित होने चाहिए।
* गैर सरकारी संगठनों को अपने लक्ष्य से नहीं भटकना चाहिए जिससे समाज में उनकी छवि बनी रहे।

इस प्रकार यदि प्रत्येक संस्था/संगठन उपर्युक्त बिंदुओं को आधार बनाकर चले तो निष्चित ही संस्था का, समाज का, जनता का कल्याण संभव होगा।

## निष्कर्ष :–

प्रस्तुत षोधपत्र के समग्र तथ्यों के विष्लेषण के पष्चात् निष्कर्ष को निम्न बिंदुओं में अभिव्यक्त किया जा सकता है–

* सागर षहर में गैर सरकारी संगठनों द्वारा मानव विकास एवं समाज कल्याण हेतु विभिन्न कार्यक्रमों को आर्थिक, सामाजिक, अन्य गतिविधियों मेंविभाजित किया गया है। संगठनों में महिला सषक्तिकरण कार्यक्रम, सरकारी योजनाओं को लोगों तक पहुचाने काकार्य(91.6%) पर अधिक जोर दिया जाता है। इसके साथ ही रोजगार प्रषिक्षण कार्यक्रम का कार्य (75%) भी करती है ताकि लोग जागरुक रहे।
* सागर षहर में कार्यरत् गैर सरकारी संगठनों अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन योजनाओं का संचालन किया जाता है। संगठनों द्वारा (58.3%) संगठन अल्पकालीन योजनाओं पर अधिक ध्यान देते है और उन्हें सम्पादित करते है।
* सागर षहर में कार्यरत् गैर सरकारी संगठनों में कार्यक्रमों के प्रचार प्रसार पोस्टर के माध्यम से, दीवार पेन्टिंग द्वारा, समाचार पत्र द्वारा, संगठन पिक्चर स्लाइड द्वारा एवं संगठन रोड षो द्वारा करते है। सबसे अधिक प्रचार प्रसार समाचार पत्र (83.3%) द्वारा किया जाता है।
* सागर षहर में कार्यरत् गैर सरकारी संगठनों में संगठनों को सबसे अधिक समस्याओं का सामना लोगों में साक्षरता के अभाव (83.3%) के कारण करना पड़ता है। षिक्षा के अभाव में लोगों को सरकारी कार्यक्रमों की सही जानकारी नहीं हो पाती जिससे उनके सहयोग का अभाव होता है। अतः इस प्रकार लोग संगठन द्वारा संचालित योजनाओं पर अधिक ध्यान नहीं देते।
* सागर षहर में कार्यरत् गैर सरकारी संगठनों में संगठन वित्तीय आवष्यकताओं पूरा करने के लिए विभिन्न स्रोतों से वित्त प्राप्त करते है लेकिन सागर संगठनों के अध्ययन में पाया गया है कि सबसे अधिक वित्त जिला पंचायत व षिक्षा विभाग द्वारा (66.6%) अर्जित करते है।
* सागर षहर में कार्यरत् गैर सरकारी संगठन में सबसे अधिक ऐच्छिक कर्मचारी अर्थात् स्वेच्छा से समाज कल्याण के लिए कार्यरत् लोगो की संख्या पायी जाती है। अधिकतर संगठन सामाजिक कल्याण की भावना से कार्य करते है।
* सागर षहर में कार्यरत् गैर सरकारी संगठनों में संगठन में सबसे अधिक व्यय कर्मचारियों (52.5%) पर किया जाता है। उसके बाद क्रमषः प्रबंधन संबंधी एवं कार्यक्रमों व योजनाओं के प्रचार प्रसार पर व्यय किया जाता है।

## सन्दर्भ–सूची


* कुमार पी.,मध्य प्रदेश का भौगोलिक अध्ययन,, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल,2002।
* गोस्वामी किरण,सागर नगर में कल्याणकारी सस्थाओं का विकास एवं समस्याओं का आर्थिक विष्लेषण,1986।
* जैन राजकुमार, सागर नगर की कल्याणकारी सस्थाओं का आर्थिक अध्ययन, 1982।
* झिंगन एम.एल.,विकास का अर्थषास्त्र एवं आयोजनश्एविकास पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली 1983।
* चौकसे, एम.एन.: ''सागर संभाग में खनिज आधारित उद्योगों का विकास एवं सम्भावनाएं'' प्रकाशन–कम्प्यूटर, सागर 2004
* झा, विवेकदत्त और दुबे, नागेश : ''बुन्देलखण्ड का सांस्कृतिक तथा राजनीतिक इतिहास'', सरोज प्रकाशन, सागर
* 'विकास प्रभा', आई.डी.वी.आई. बैंक लिमिटेड का हिन्दी त्रैमासिक, अक्टूबर–सितम्बर 2009.
* मदन जी. आर.,भारत का सामाजिक पुनर्निर्माण, विवेक प्रकाषन, दिल्ली,1996।
* मिश्र दयाकृष्ण,राठौर ए. एस.,सामाजिक प्रषासन, कॉलेज बुक डिपो, नई दिल्ली 2011।
* राय पारसनाथ,अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगराश्1993।
* त्रिवेदी सुषील, षुक्ला षषिकान्त,जन सम्पर्क सिद्धान्त और व्यवहार, मध्य प्रदेष हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल,1996।
* कुरुक्षेत्र, दिसम्बर 1990, मई 1991, मार्च, जून, जुलाई 1996।
* जिला सांख्यिकी पुस्तिका, कार्यालय जिला सांख्यिकी, सागर, 2008–09।
* म.प्र. जन अभियान परिषद, सागर।
* योजना, नवम्बर–2011
* सामाजिक परिवर्तन।
* Carolyn Stephenson, Nongovernmental Organization, 2005.
* Guler Esra, How to Improve NGO effectiveness in development? A discussion on lesson learned, 2008.
* Gulati kunal, Shrivastava priyanka,Quality Issues in NGOs, NITIE Mumbai, India.
* Ndung Wainaina, Role of NGOs in Conflict Prevention Crucial, 2006.
* www.mponline.gov.in
* www.sagarcity.gov.in